रविवार मई 14, 2017
2 तीमुथियुस श्रृंखला
अध्याय 2: आदर के योग्य पात्र बनो

2 तीमुथियुस अध्याय 2 पढ़ें

2 तीमुथियुस 2:1
इसलिये हे मेरे पुत्र, तू उस अनुग्रह से जो मसीह यीशु में है, बलवन्त हो जा,

"मसीह यीशु में अनुग्रह के द्वारा सामर्थी बनाए जाओ।"

परमेश्वर का अनुग्रह हमें सामर्थ देता है, हमें मजबूत बनाता है।
हम उसके अनुग्रह से बल प्राप्त करते हैं।

जैसे-जैसे हम इस अध्याय में आगे बढ़ेंगे, हम कई बातों को देखेंगे जो पौलुस परमेश्वर के जन होने के विषय में कहता है। कभी-कभी हमें लग सकता है कि ये बातें हमारे लिए बहुत कठिन हैं। परन्तु हमें अनुग्रह के द्वारा सामर्थी बनाया जाना है।

2 तीमुथियुस 2:2
और जो बातें तू ने बहुत से गवाहों के सामने मुझ से सुनी हैं, उन्हें विश्वासी मनुष्यों को सौंप दे; जो दूसरों को भी सिखाने के योग्य हों।

अब पौलुस तीमुथियुस को आदेश देता है कि वह जिन सत्यों को सीख चुका है, उन्हें आगे आने वाली "पीढ़ियों" तक पहुँचाए।

यह ऐसी बात है जो हम सब को करनी चाहिए।
जो बातें आपने परमेश्वर के साथ अपने जीवन के विषय में सीखी हैं, उनका आप क्या कर रहे हैं? क्या आप उन्हें आगे पहुँचा रहे हैं?

2 तीमुथियुस 2:3-7
3 मसीह यीशु के अच्छे योद्धा के समान मेरे साथ दु:ख उठा।
4 जब कोई योद्धा लड़ाई पर जाता है, तो इसलिये कि अपने भरती करनेवाले को प्रसन्न करे, अपने आप को संसार के कामों में नहीं फँसाता।
5 फिर अखाड़े में लड़नेवाला यदि विधि के अनुसार न लड़े तो मुकुट नहीं पाता।
6 जो किसान परिश्रम करता है, फल का अंश पहले उसे मिलना चाहिए।
7 जो मैं कहता हूँ उस पर ध्यान दे, और प्रभु तुझे सब बातों की समझ देगा।

इन उदाहरणों से चार शिक्षाएँ :
कठिनाइयों को सहो — परमेश्वर का जन होना आसान बात नहीं है। अब तुम एक सिपाही के समान हो।
गलत बातों में न उलझो — अपने आप को स्वतंत्र रखो ताकि जो कार्य परमेश्वर ने तुम्हें बुलाया है, उसे कर सको।

नियमों के अनुसार दौड़ो — परमेश्वर की बुलाहट के लिए उसके अपने मापदण्ड हैं। उसी के अनुसार जीवन बिताओ।
कड़ी मेहनत करो — बिना परिश्रम के कोई फसल नहीं होती जिसका आनन्द लिया जा सके।

2 तीमुथियुस 2:8-10
8 यीशु मसीह को स्मरण रख, जो दाऊद के वंश से हुआ और मरे हुओं में से जी उठा, और यह मेरे सुसमाचार के अनुसार है।
9 जिसके लिये मैं कुकर्मी के समान दु: ख उठाता हूँ, यहाँ तक कि कैद भी हूँ; परन्तु परमेश्‍वर का वचन कैद नहीं।
10 इस कारण मैं चुने हुए लोगों के लिये सब कुछ सहता हूँ, कि वे भी उस उद्धार को जो मसीह यीशु में है अनन्त महिमा के साथ पाएँ।

यही वह सुसमाचार है जिसका हम प्रचार करते हैं और जिसके लिए हम कठिनाइयाँ सहने को भी तैयार हैं, ताकि दूसरे लोग उद्धार प्राप्त कर सकें।

2 तीमुथियुस 2:11-13
11 यह बात सच है,
कि यदि हम उसके साथ मर गए हैं,
तो उसके साथ जीएँगे भी;
12 यदि हम धीरज से सहते रहेंगे, तो उसके
साथ राज्य भी करेंगे;
यदि हम उसका इन्कार करेंगे, तो वह भी
हमारा इन्कार करेगा;
13 यदि हम अविश्‍वासी भी हों,
तौभी वह विश्‍वासयोग्य बना रहता है,
क्योंकि वह आप अपना इन्कार नहीं कर
सकता।

कठिनाइयों को सहते समय यही हमारी आशा है...यदि हम मरते हैं, तो जीवित भी होंगे; यदि हम धीरज धरते हैं, तो राज्य भी करेंगे।
दूसरी ओर, उसके इन्कार के परिणाम भी बहुत गंभीर हैं।
हमारा इन्कार करना और अविश्वासी हो जाना हमें प्रभावित करता है — परन्तु इससे उसकी ओर से कुछ नहीं बदलता।
इसका अर्थ यह है कि यदि हम में से किसी ने कभी प्रभु का इन्कार किया हो या अविश्वास के क्षणों से गुज़रा हो, तो वह फिर लौट सकता है — क्योंकि वह नहीं बदला है। वह अब भी तुम्हारे प्रति विश्वासयोग्य बना हुआ है।

2 तीमुथियुस 2:14
इन बातों की सुधि उन्हें दिला और प्रभु के सामने चिता दे कि शब्दों पर तर्क–वितर्क न किया करें, जिनसे कुछ लाभ नहीं होता वरन् सुननेवाले बिगड़ जाते हैं।

हमें कलीसिया में परमेश्वर के लोगों को इन बातों की शिक्षा और प्रोत्साहन देना चाहिए — अर्थात् यीशु मसीह के सुसमाचार के लिए कठिनाइयों को सहना।
हमें परमेश्वर के लोगों को यह भी सिखाना और समझाना चाहिए कि वे व्यर्थ बातों, शब्दों के झगड़ों, विचारों और ऐसे विवादों से दूर रहें जिनसे कोई लाभ नहीं होता।

2 तीमुथियुस 2:15
अपने आप को परमेश्वर का ग्रहणयोग्य और ऐसा काम करनेवाला ठहराने का प्रयत्न कर, जो लज्जित होने न पाए, और जो सत्य के वचन को ठीक रीति से काम में लाता हो।

परिश्रम कर...यह एक निरन्तर और लगातार किया जाने वाला कार्य है, जिसे सावधानी और गंभीरता के साथ करना होता है...
A, अपने आप को परमेश्वर के सामने खरा दिखाओ: ऐसा जीवन जीओ जो परमेश्वर के सामने सही हो।
B, ऐसा काम करने वाला बनो जिसे लज्जित न होना पड़े: इस प्रकार कार्य करो कि परमेश्वर के सामने लज्जित न होना पड़े।
C, सत्य के वचन को ठीक रीति से काम में लाओ: सावधान रहो कि तुम परमेश्वर के वचन को कैसे संभालते हो, "सीधा काट" करो, "सही रीति से विभाजित करो।"

2 तीमुथियुस 2:16-18
16 पर अशुद्ध बकवाद से बचा रह, क्योंकि ऐसे लोग और भी अभक्ति में बढ़ते जाएँगे,
17 और उनका वचन सड़े घाव की तरह फैलता जाएगा। हुमिनयुस और फिलेतुस उन्हीं में से हैं,
18 जो यह कहकर कि पुनरुत्थान हो चुका है सत्य से भटक गए हैं, और कितनों के विश्वास को उलट पुलट कर देते हैं।

हम नहीं जानते कि ये दोनों व्यक्ति कौन थे। हुमिनयुस का उल्लेख पौलुस ने 1 तीमुथियुस 1:20 में भी किया है। हम केवल इतना जानते हैं कि ये लोग व्यर्थ और अभक्ति की बातें कर रहे थे, जो विनाशकारी रूप से फैल रही थीं और कुछ लोगों के विश्वास को नष्ट कर रही थीं। जैसा कि पौलुस ने 1 तीमुथियुस में बताया, उसने इनके विषय में कार्यवाही की थी।

2 तीमुथियुस 2:19-21
19 तौभी परमेश्वर की पक्की नींव बनी रहती है, और उस पर यह छाप लगी है : "प्रभु अपनों को पहिचानता है," और "जो कोई प्रभु का नाम लेता है, वह अधर्म से बचा रहे।"
20 बड़े घर में न केवल सोने–चाँदी ही के, पर काठ और मिट्टी के बरतन भी होते हैं; कोई–कोई आदर, और कोई–कोई अनादर के लिये।
21 यदि कोई अपने आप को इनसे शुद्ध करेगा, तो वह आदर का बरतन और पवित्र ठहरेगा; और स्वामी के काम आएगा, और हर भले काम के लिये तैयार होगा।

प्रेरित पौलुस घर में उपयोग किए जाने वाले बर्तनों से एक उदाहरण देता है। कुछ पात्र ऐसे होते हैं जो सामान्य, प्रतिदिन के साधारण उपयोग के लिए होते हैं, और कुछ विशेष पात्र होते हैं जो विशेष अवसरों और उद्देश्यों के लिए उपयोग किए जाते हैं। घर का स्वामी इन विशेष पात्रों पर "गर्व" करता है, उन्हें

प्रदर्शित करता है और सम्मानित अतिथियों को परोसने तथा विशेष भोजन परोसने के लिए उनका उपयोग करता है।

आदर का पात्र बनने का अर्थ है — ऐसा पात्र जो विशेष उद्देश्यों के लिए, सम्मानजनक उपयोग के लिए काम में लाया जा सके, और ऐसा पात्र जो आदर लाए।

हम आदर के पात्र के लिए चार महत्वपूर्ण आवश्यकताओं को देखते हैं :
#1, शुद्ध किया हुआ (पाप से अलग होना)
#2, पवित्र किया हुआ (प्रभु के लिए अलग रखा गया, पवित्र)
#3, उपयोगी (उपलब्ध, सहज रूप से उपयोग किए जाने योग्य)
#4, तैयार (सुसज्जित, तत्पर)

"यदि कोई" .... आदर का पात्र बनने का अवसर सबके लिए खुला है...कोई भी इन 4 आवश्यकताओं पर कार्य करके ऐसा पात्र बन सकता है .... और पद 1 को स्मरण रखें, यह मसीह यीशु में पाए जाने वाले अनुग्रह के द्वारा सम्भव है...

2 तीमुथियुस 2:22
जवानी की अभिलाषाओं से भाग, और जो शुद्ध मन से प्रभु का नाम लेते हैं उनके साथ धर्म, और विश्वास, और प्रेम, और मेलमिलाप का पीछा कर।

आदर का पात्र बनने की दृष्टि से हमारे पास केवल एक ही चुनाव है — अभक्ति की अभिलाषाओं से दूर रहना और उसके स्थान पर धर्म, विश्वास, प्रेम और मेल-मिलाप का पीछा करना।

यह कार्य "उन लोगों के साथ करो जो शुद्ध मन से प्रभु को पुकारते हैं"....अर्थात् ऐसे लोगों के समुदाय में रहकर करो जो स्वयं भी यही कर रहे हैं।
1, इसलिए हम अपना जीवन समुदाय में जीते हैं — उन लोगों के साथ जो यही मार्ग अपना रहे हैं।
2, यदि आप आदर का पात्र बनना चाहते हैं, तो उन लोगों के साथ रहें जो स्वयं भी ऐसा बनने का प्रयास कर रहे हैं।

2 तीमुथियुस 2:23-26
23 पर मूर्खता और अविद्या के विवादों से अलग रह, क्योंकि तू जानता है कि इनसे झगड़े उत्पन्न होते हैं।
24 प्रभु के दास को झगड़ालू नहीं होना चाहिए, पर वह सब के साथ कोमल और शिक्षा में निपुण और सहनशील हो।
25 वह विरोधियों को नम्रता से समझाए, क्या जाने परमेश्वर उन्हें मन फिराव का मन दे कि वे भी सत्य को पहिचानें,
26 और इसके द्वारा उसकी इच्छा पूरी करने के लिये सचेत होकर शैतान के फंदे से छूट जाएँ।

मूर्खतापूर्ण और अज्ञान की बहसों तथा झगड़े उत्पन्न करने वाली बातों में न पड़ो।
इसके स्थान पर, प्रभु के सेवक के रूप में नम्र बनो और धीरज के साथ लोगों को सिखाओ। यहाँ तक कि जो विरोध करते हैं, उन्हें भी नम्रता से सुधारो।
समझो कि जो लोग विरोध करते हैं, वे वास्तव में शैतान के फन्दे में फँसे हुए हैं। वे इस समय ऐसी स्थिति में हैं जहाँ शैतान ने उन्हें बन्दी बना रखा है।

यह परमेश्वर ही है जो उनके हृदयों में कार्य करेगा, उन्हें मन फिराव के स्थान तक और सत्य की पहचान तक खींचेगा, ताकि वे शैतान के बंधन से बाहर आ सकें।

यह हमें प्रार्थना के महत्व को भी दिखाता है।
जबकि हम अपना भाग पूरा कर सकते हैं — प्रेम, नम्रता और धीरज के साथ सत्य को बाँटना और सिखाना — हमें प्रार्थना में भी लगे रहना चाहिए, ताकि लोग अपने जीवन पर शत्रु के फन्दे से बाहर आ सकें।

मुख्य सीख

2 तीमुथियुस 2:21
यदि कोई अपने आप को इनसे शुद्ध करेगा, तो वह आदर का बरतन और पवित्र ठहरेगा; और स्वामी के काम आएगा, और हर भले काम के लिये तैयार होगा।

आदर का पात्र बनो।
इस अध्याय की हर एक शिक्षा इसी एक अत्यन्त महत्वपूर्ण बुलाहट की ओर निर्देशित है।

सेवा का समय

लाइफ़ ग्रुप अध्ययन मार्गदर्शिका

रविवार मई 14, 2017
2 तीमुथियुस अध्याय 2

यह लाइफ ग्रुप चर्चाओं में उपयोग के लिए एक सरल मार्गदर्शिका है। हमारा उद्देश्य रविवार के संदेश के अनुप्रयोग पर ध्यान केंद्रित करना है—कि कैसे प्रत्येक व्यक्ति वचन का करने वाला बन रहा है और अपने जीवन को परमेश्वर के पवित्र वचन पर बना रहा है। लाइफ ग्रुप की सभा सामान्यतः 2 घंटे की होती है। प्रत्येक लाइफ ग्रुप में लगभग 12-15 लोग होते हैं।

तैयारी
लाइफ ग्रुप बैठक की तैयारी के लिए, आप Sermon Key Points (पाँच मिनट में संदेश का सार) या पूरा रविवार का संदेश सुन सकते हैं। आप रविवार के संदेश के नोट्स भी देख सकते हैं। यह सभी "All Peoples Church Bangalore-ऑल पीपल्स चर्च बैंगलोर" मोबाइल ऐप में या ऑनलाइन **apcwo.org/sermons** पर उपलब्ध हैं। लाइफ ग्रुप बैठक के लिए प्रार्थना करें और पवित्र आत्मा के कार्य और सेवकाई को आमंत्रित करें।

स्वागत
लाइफ ग्रुप बैठक की शुरुआत प्रार्थना, आराधना और किसी मनोरंजक गतिविधि के समय से हो सकती है।

परमेश्वर के वचन को सुनें
निम्नलिखित शास्त्र खंड पढ़ें: *2 तीमुथियुस अध्याय 2*

मिलकर परमेश्वर के वचन की जाँच करें
कृपया इनमें से कुछ प्रश्नों पर मिलकर चर्चा करें, और लोगों को अपनी समझ साझा करने का अवसर दें। हम प्रत्येक व्यक्ति को प्रोत्साहित करते हैं कि समूह चर्चा के दौरान अपने व्यक्तिगत सीख को लिख लें।

A) सैनिक, खिलाड़ी और किसान के दृष्टांत के द्वारा पौलुस जो चार शिक्षाएँ देता है, उनका पुनरावलोकन कीजिए (2:3-7)।

B) क्लेशों को सहते हुए, 2:11-13 के अनुसार हम अपने भीतर कौन-सी आशा रखते हैं?

C) 2:15 में बताए गए तीन क्षेत्रों में कोई व्यक्ति व्यवहारिक रूप से किस प्रकार परिश्रमी बन सकता है?

D) 2:19-21 में बताए गए अनुसार आदर के पात्र बनने के लिए चार महत्वपूर्ण आवश्यकताओं का पुनरावलोकन कीजिए।

E) 2:23-26 के अनुसार, जो लोग सुसमाचार का विरोध करते हैं, उनके साथ आपको किस प्रकार व्यवहार करना चाहिए?

यदि समय अनुमति दे, तो प्रत्येक व्यक्ति कुछ मिनट (अधिकतम तीन मिनट) लेकर एक या दो मुख्य सीख साझा करे और यह बताए कि वे इसे अपने विशिष्ट जीवन परिस्थितियों में कैसे लागू होते हुए देखते हैं। प्रत्येक व्यक्ति को भाग लेने और साझा करने के लिए प्रोत्साहित करें।

अपने जीवन और आत्मिक यात्रा को साझा करते हुए संगति करें

प्रत्येक व्यक्ति कुछ मिनट (अधिकतम 3 मिनट) लेकर परमेश्वर के साथ अपने जीवन से संबंधित कुछ भी साझा करे—जो कुछ परमेश्वर उन्हें सिखा रहा है, प्रार्थना के उत्तर की कोई गवाही, या कोई विशेष चुनौती जिसके लिए वे प्रार्थना चाहते हैं। प्रत्येक व्यक्ति को भाग लेने और साझा करने के लिए प्रोत्साहित करें।

एक-दूसरे को प्रोत्साहित करें—प्रार्थना और सेवकाई के द्वारा

दो या तीन लोगों के छोटे समूहों में बँट जाएँ और बारी-बारी से आज जो सीखा गया है उसके प्रकाश में परमेश्वर को धन्यवाद दें और एक-दूसरे के लिए प्रार्थना करें। पवित्र आत्मा की अगुवाई सुनें। पवित्र आत्मा के वरदानों के बहने की अपेक्षा रखें—चंगाई, चमत्कारों की रिहाई, भविष्यवाणी आदि के द्वारा।

पुनः एकत्रित हों और इन विषयों के लिए मिलकर प्रार्थना करें:

1) *परिवारों की सुरक्षा और सुदृढ़ता के लिए*
2) *कलीसिया के रूप में हम पर परमेश्वर के पवित्र आत्मा का एक शक्तिशाली उंडेलाव हो, और हमारे द्वारा हमारे नगर और राष्ट्र में बहुतों को आशीष मिले। केवल परमेश्वर के आत्मा का सामर्थी कार्य ही हमारे नगर और राष्ट्र को बदल सकता है।*
3) *BUILD TO IMPACT (प्रभाव के लिए निर्माण करें) परियोजना के लिए—भूमि की खोज और अधिग्रहण की प्रक्रिया में परमेश्वर के हाथ की अगुवाई के लिए, और इस परियोजना को पूरा करने के लिए पर्याप्त से भी अधिक वित्तीय प्रावधान के लिए।*

अंत में मिलकर परमेश्वर को धन्यवाद देते हुए समाप्त करें।

उपयोगी संसाधन

हर रविवार सुबह 10:30 बजे (भारतीय समय, GMT+5:30) हमारी ऑनलाइन संडे चर्च सेवा का लाइव प्रसारण देखें। पवित्र आत्मा से परिपूर्ण, अभिषिक्त आराधना, वचन और चंगाई, चमत्कार तथा छुटकारे की सेवा।
यूट्यूब: https://youtube.com/allpeopleschurchbangalore
वेबसाइट: https://apcwo.org/live

हमारी अन्य वेबसाइट्स और निःशुल्क संसाधन:
चर्च: https://apcwo.org
निःशुल्क संदेश: https://apcwo.org/resources/sermons
निःशुल्क पुस्तकें: https://apcwo.org/books/Hindi
दैनिक भक्ति-वचन: https://apcwo.org/resources/daily-devotional
यीशु मसीह: https://examiningjesus.com
बाइबल कॉलेज: https://apcbiblecollege.org
ई-लर्निंग: https://apcbiblecollege.org/elearn
वीकेंड स्कूल्स: https://apcwo.org/ministries/weekend-schools
काउंसलिंग: https://chrysalislife.org
संगीत: https://apcmusic.org
मिनिस्टर्स फेलोशिप: https://pamfi.org
चर्च ऐप: https://apcwo.org/app
चर्चेस: https://apcwo.org/ministries/churches
विश्व मिशन: https://apcworldmissions.org